International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संत रविदास की वाणी का सामाजिक चिंतन

डॉ कामराज सिन्धु

जीवनवृत -

मन चंगा तो कठौती में गंगा का संदेश देने वाले गुरु रविदास जी 15 वीं-16 वीं शताब्दी में एक महान संत, दार्शनिक, कवि, समाज सुधारक के रूप मे हुए। । गुरु रविदास जी को निर्गुण सम्प्रदाय के रूप मे जानते थे, जिन्होंने उत्तरी भारत में भक्ति आन्दोलन का नेतृत्व किया था । रविदास जी बहुत एक कवि के रूप मे भी जाना जाता था , इन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से, अपने अनुयायीयों, समाज एवं देश के कई लोगों को धार्मिक एवं सामाजिक सन्देश दिया । रविदास जी की रचनाओं में उनके अंदर भगवान् के प्रति प्रेम की झलक साफ़ दिखाई देती थी, वे अपनी रचनाओं के द्वारा दूसरों को भी परमेश्वर से प्रेम के बारे में बताते थे , और उनसे जुड़ने के लिए कहते थे। आम लोग उन्हें मसीहा मानते थे , क्यूंकि उन्होंने सामाजिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बड़े - बड़े कार्य किये थे। उनके अनुयाइ इन्हें भगवान की तरह पूजते थे, और आज भी उनका वही सम्मान है। समाज में धर्म के नाम पर तथाकथित क्रियाकलाप मनुष्य और मनुष्यता के दुश्मन बनकर हमारे सामने आए दिन आते हैं।रविदास जी इन आडंबरों से मुक्त हो कर मन की शुद्धता और श्रम को महत्त्व देने की शिक्षा दी।यही कारण है कि जाति,धर्म और संप्रदाय से परे होकर रविदास जी का चिंतन पूरे विश्व को प्रकाशित करता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है।उनकी बातें कम शब्दों में विस्तृत अर्थ देती हैं ,जिससे उन्हें सामाजिक क्रांति का अग्रदूत कहा जाता है।आज के इस आधुनिक समय में संपूर्ण मानव जाति को विखंडित होने से बचाने के लिए रविदास जी के चिंतन का अनुसरण करना आवश्यक है। लगभग सवा छः सौ वर्ष पूर्व 1398 की माघ पूर्णिमा को काशी के मड़ुआडीह ग्राम में संतोख दास और कर्मा देवी के परिवार में जन्में संत रविदास यानि संत रैदास को निस्संदेह हम भारत में धर्मांतरण के विरोध में स्वर मुखर करनें वाली और स्वधर्म में घर वापसी करानें वाली प्रथम पीढ़ी के प्रतिनिधि संत के रूप मए जानते है। संत रैदास संत कबीर के गुरुभाई और स्वामी रामानंद जी के शिष्य थे यह बात आज भी साबित नही हो पाई । उनकें कालजयी लेखन को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि उनकें रचित 40 दोहे गुरु ग्रन्थ साहब जैसे महान ग्रन्थ में सम्मिलित किये गए हैं । मानव की पवित्रता और सज्जनता मान भाव के द्वारा मनुष्य का मूल्यांकन होता है। इससे मानव गुण न केवल अपना अपितु समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करता है और मनुष्य जीवन लक्ष्य की पूर्ति से सहायक होते हैं। वेद - शास्त्रों में सेवा , दान , परहित कामना , सत्य आचरण , संतोष , अपरिग्रह आदि को आंतरिक शुचिता के लिए महत्वपूर्ण बताया है। इसलिए मनुष्य को काम , क्रोध , लोभ , मोह , ईष्र्या वैर से रहित होकर मानवीय भावना से प्रेरित होकर हमें मानवता की सेवा करनी चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न,

छोट-बड़ो सब सम बसे, रविदास रहे प्रसन्न'

संत रविदास एक ऐसे समाज की कल्पना करना चाहते थे जिसमे सबको समान अधिकार मिले और जीवन यापन के सभी साधन । भारतीय समाज में आजकल धर्मांतरण और हिन्दू धर्म में घर वापसी एक बड़ा विषय चर्चित और उल्लेखनीय है। यह विषय राजनैतिक कारणों से चर्चित भले ही अब हो रहा हो कि किन्तु सामाजिक स्तर पर धर्मांतरण हिन्दुस्थान में सदियों से एक चिंतनीय विषय रहा है । इस देश में धर्मांतरण की चर्चा और चिंता पिछले आठ सौ वर्षों पूर्व प्रारम्भ हो गई थी , समय-काल-परिस्थिति के अनुसार यह चिंता कभी मुखर होती रही तो अधिकांशतः आक्रान्ताओं और आततताइयों के अत्याचार से दबे-कुचले स्वरुप में अन्दर ही अन्दर और पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होती रही। बहरवी सदी में जब मुस्लिम आक्रान्ता भारत की ओर बढ़े तब वे धन लूटनें और धर्म के प्रचार के स्पष्ट और घोषित एजेंडे के साथ ही आये थे । इन बाहरी आक्रान्ताओं और शासकों को भारत की जनता को बहला फुसलाकर या जबरदस्ती बलात धर्मांतरण करानें में किसी प्रकार का कोई कसर नहीं छोड़ी , ऐसा करके वे अपनें को गौरान्वित ही महसूस करते थे। उस दौर में स्वाभावतः ही हिंदुस्थानी परिवेश में धर्मांतरण को लेकर भय, चिंता और इससे छुटकारे पाने की प्रवृत्ति उपजने लगी थी। कुछ समय के साथ साथ धर्मान्तारण कारी शक्तियों से छुटकारा पानें की यह प्रवृत्ति समय-काल-परिस्थिति के अनुसार कभी उभरती और कभी दबती रही किन्तु सदैव जीवित अवश्य रही।

संत रैदास ने जब समाज में तत्कालीन आततायी विदेशी मुस्लिम शासक सिकंदर लोदी का आतंक देखा तब वे दुखी हो बैठे। उस समय लोदी ने हिंदुस्थानी जनता को सताना-कुचलना और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डराकर धर्म परिवर्तन कराना प्रारम्भ किया हुआ था। हिन्दुओं पर विभिन्न प्रकार के नाजायज कर जैसे तीर्थ -यात्रा पर जजिया कर, शव -दाह करनें पर कर, हिन्दू रीति से विवाह करनें पर जजिया कर जैसे आततायी आदेशों से देश का हिन्दू समाज त्राहि-त्राहि कर उठा था । भारतीय-हिन्दू परंपराओं और आस्थाओं के पालन करनें वालों से कर वसूल करनें और मुस्लिम धर्म माननें वालों को छूट, प्राथमिकता वरीयता देनें के पीछे एक मात्र भाव यही था कि हिन्दू धर्मावलम्बी तंग आकर इस्लाम स्वीकार कर लें। उस समय में स्वामी रामानंद ने अपनें भक्ति भाव के माध्यम से देश में भक्ति का भाव जागृत किया और आततायी मुसलमान शासकों के विरुद्ध एक आन्दोलन को प्रारम्भ किया ।स्वामी रामानन्द ने तत्कालीन परिस्थितियों को समझकर कर विभिन्न जातियों के प्रतिनिधि संतों को जोड़कर द्वादश भगवत शिष्य मण्डली स्थापित की तथा विभिन्न समाजों का प्रतिनिधित्व करनें वाली इस द्वादश मंडली के सूत्रधार और प्रमुख , संत रविदास जी को बनाया।संत रैदास ने हिन्दू संस्कारों के पालन पर मुस्लिम शासकों द्वारा लिए जानें वाले जजिया कर का अपनी मंडली के मध्यम से विरोध किया और इस हेतु जागरण अभियान चलाया गया।इस मंडली ने सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर देशज भाव और स्वधर्म भाव के रक्षण और उसके जागरण का दूभर कार्य करना प्रारम्भ किया । संत रैदास के नेतृत्व में उस समय समाज में ऐसा जागरण हुआ कि उन्होंने धर्मांतरण को न केवल रोक दिया बल्कि उस कठिनतम और चरम संघर्ष के दौर में मुस्लिम शासकों को खुली चुनौती देते हुए देश के अनेकों क्षेत्रों में धर्मान्तरित हिन्दुओं की घरवापसी का कार्यक्रम भी जोरशोर से चलाया। संत रविदास न केवल देश भर की पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार्य संत हो गए अपितु अगड़ी जातियों के शासकों और राजाओं ने भी उन्हें राजनैतिक कारणों से अपनें अपनें दरबार में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सम्मानपूर्ण स्थान देना प्रारम्भ कर दिया । इस प्रकार संत रविदास को मिलनें वाले सम्मान के कारण देश की पिछड़ी और अगड़ी जातियों एतिहासिक समरसता का वातावरण निर्मित हो चला था। संत रैदास भारतीय सामाजिक एकता के प्रतिनिधि संत के रूप में स्थापित हो गए थे क्योंकि मुस्लिम शासकों को चुनौती देनें का जो दुष्कर कार्य ये शासक नहीं कर पाए थे वह समाज शक्ति को जागृत करनें के बल पर एक संत ने कर दिया था। पिछड़ी जातियों में आर्थिक व सामाजिक पिछड़ेपन के बाद भी स्वधर्म सम्मान का भाव जागृत करनें में रैदास सफल रहे और इसी का परिणाम है कि आज भी इन जातियों में मुस्लिम मतांतरण का बहुत कम प्रतिशत देखनें को मिलता है । निर्धन और अशिक्षित समाज में धर्मांतरण रोकनें और घर वापसी का जो अद्भुत, दूभर और दुष्कर कार्य उस काल में हुआ वह इस दिशा में प्रतिनिधि रूप में संत रैदास का ही सूत्रपात था। यदि उस समय कहीं संत रैदास आततायी लोदी के दिए लालच में फंस जाते या उससे भयभीत हो जाते तो इस देश के हिंदुस्थानी समाज की बड़ी हानि होती।

उन्होंने अपनी रैदास रामायण में लिखा –

"वेद धर्म सबसे बड़ा अनुपम सच्चा ज्ञान

फिर क्यों छोड़ इसे पढ लूं झूठ कुरआन

वेद धर्म छोडूं नहीं कोसिस करो हजार

तिल-तिल काटो चाहि,गला काटो कटार"

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'कह रैदास तेरी भगति दूरि है , भाग बड़े सो पावै तजि अभिमान मेटि आपा पर , पिपिलक हवै चुनि खावै।'

इसका अर्थ है कि ईश्वर भक्ति अहोभाग्य होती है। अभिमान शून्य रहकर काम करने वाला व्यक्ति जीवन में सफल रहता है जैसे कि विशाल हाथी शक्कर के कणों को चुनने में असमर्थ रहता है , जबकि लघु शरीर की 'पिपीलिका' यानि चींटी इन कणों का सहजता से भक्षण कर लेती है। इस प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर भक्त हो सकता है । अपनें सहज-सुलभ उदाहरणों वाले और साधारण भाषा में दिए जानें वाले प्रवचनों और प्रबोधनों के कारण संत रैदास भारतीय समाज में अत्यंत आदरणीय और पूज्यनीय हो गए थे। वे भारतीय वर्ण व्यवस्था को भी समाज और समय अनुरूप ढालनें में सफल हो गए वे अपनें जीवन के अन्तकाल तक धर्मांतरण के विरोध में समाज को जागृत करते रहे और वैदिक धर्म में घर वापसी का कार्य भी ,उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म और राष्ट्र रक्षार्थ जिया ।संत रैदास ने भारतीय समाज को **"मन चंगा तो कठौती में गंगा** " जैसी कालजयी लोकोक्ति दी जिसके बड़े ही सकारात्मक अर्थ वर्तमान परिवेश में भी निकलतें हैं । स्वामी विवेकानंद ने एक धर्मांतरण से एक राष्ट्र शत्रु के जन्म का जो विचार वर्तमान काल में प्रकट किया उसे संत रैदास नें छः सौ वर्ष पूर्व समझ दिया था और राष्ट्र को समझानें बतानें हेतु देश के हर हिस्सें में जाकर जागरण भी किया था । नमन इस अद्भुत संत को , राष्ट्रभक्त को और अनुपम भविष्यदृष्टा को. संत-साहित्य भारतीय चिंतन की विभिन्न विचार-सरणियों का अपूर्व समुच्चय है। स्वानुभूति और सहजावस्था ही वह भारत के लिए अज्ञान , अशिक्षा और अनैतिकता का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अंधकारमय युग था और ये कवि अपने युग की जनता के निम्न स्तर से संबंधित थे , फिर भी इन्होंने ज्ञान की जो ज्योति प्रज्ज्वलित की, वह अद्‌भूत एवं अपूर्व है।

आज भले ही हमने आधुनिकता का मुखौटा ओढ़ रखा हो किन्तु हमारी अवस्था मध्ययुग से भी बदतर है। आज का औसत मनुष्य शंका , उलझन, विषमता-बोध, असंगति तथा अनिश्चय की मानसिकता से ग्रसित है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण , वैज्ञानिकता, अतिबौद्धिकता, नगरीकरण, बढ़ती हुई आबादी , फ़िल्मों के दुष्परिणाम आदि के कारण मानवीय जीवनमूल्य टूटने लगे हैं और उनमें परिवर्तन होने लगा है। आदमी स्वार्थी हो गया है। वैयक्तिकता , निराशा, कुंठा, अनास्था, घुटन, विद्रोही भावना उसमें छा गई है। नज़दीक के रिश्तों को भी वह भूल गया है। बौद्धिकता का महत्त्व इतना बढ़ रहा है कि मानवीय भावनाओं को वह निगल गई है। निष्ठा , शील, सत्य, उदारता, नैतिकता, प्रामाणिकता, पवित्रता, सदाचार आज मनुष्य में कम दिखाई देते हैं। सौंदर्यात्मक , नैतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, मानवीय जीवन-मूल्यों का विघटन होता जा रहा है।

मनुष्य अर्थ के लिए सभी मूल्यों को कुचलता जा रहा है। इस स्थिति को देखकर कमलेश्वर लिखते हैं- "कितना विचित्र और विकराल है यह दृश्य जो कुछ ही वर्षों में इस देश में उपस्थित हो गया है कि ज़हर खाकर आदमी जीवित रह सकता है पर एक कटोरी दाल पीकर मर सकता है, इमारतें बनती जाएँ और आदमी लुटता जाए, बैंक खुलते जाएँ और आदमी ग़रीब होता जाए, सरकारें बनती जाएँ , आदमी पथराता जाए और खून के आँसू रोता जाए।" अतः इस भीषण

वर्तमान परिवेश में संतों की पीयूषवाणी जनसाधारण को सबल प्रदान कर सकती है। आज के त्रस्त, उपेक्षित, उत्पीड़ित मानव को परिज्ञान प्रदान कर , उसका पथप्रदर्शन कर , समाज को सशक्त, निर्दोष एवं कल्याणकारी मार्ग पर अग्रसर करना केवल संत साहित्य के सामाजिक आदर्शों के वरण से ही संभव है।

संत-साहित्य उतना ही प्राचीन है जितनी प्राचीन मनुष्य के हृदय की उपासना-प्रवृत्ति। संत कवियों ने अपने विचारों में निहित सत्य को शाश्वत एवं विश्वजनीत मानते हुए , उन्हें दूसरों के हितार्थ प्रकट करना चाहा। इन कवियों का काव्य , शास्त्रों का विवेचन अथवा पांडित्य प्रदर्शन नहीं है, अपितु यह काव्य उनके अनुभवों की उपज है इसलिए यह सीधे जन-मानस में प्रवेश कर जाता है। मसि कागद छूयो नहीं , कलम गह्यो नहीं हाथ-जैसी स्वीकारोक्ति द्वारा कबीर स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने जो कुछ भी प्राप्त किया अपनी साधना और अनुभवों से प्राप्त किया। वे शास्त्रों अथवा पोथियों की बात नहीं करते। अनुभूति सत्य होने के कारण ही कबीर की उक्तियाँ शाश्वत सत्य की तरह आज भी प्रासंगिक हैं।

आज मानव-मानव में धर्म , अर्थ, स्तर आदि के आधार पर भेद चरम पर है। मनुष्य-मनुष्य का दुश्मन बन बैठा। ऐसे में इस भेद को मिटाकर ही एकता के निर्माण द्वारा स्वस्थ समाज की नींव डाली जा सकती है। संत कवियों के अनुसार यह सारा जगत् एक ही तत्व से उत्पन्न है। इसलिए सभी प्रकार की भेद-दृष्टि मिथ्या है। मानव-मानव में भेद तो परम अज्ञान का द्योतक है। इसी तत्व दृष्टि से प्रेरित संत कवियों ने जाति-पाँति , छूआ-छूत, ऊँच-नीच और ब्राह्मण-शुद्र के भेद का विरोध किया। इसमें संदेह नहीं कि इन भेदों को दूर करने पर एक सुन्दर समाज की रचना हो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सकती है। ऐसा समाज जिसमें मनुष्य केवल मनुष्य रूप में स्थापित हो सके- जो आज तक संभव नहीं हुआ। कबीर कहते हैं कि एक ही ज्योति सब में व्याप्त है, दूसरा कोई तत्व है ही नहीं-

एकहि ज्योति सकल घट व्यापक दूजा तत्व न होई।

कहै कबीर सुनौ रे संतो भटकि मरै जनि कोई॥

अतः जाति-धर्म के आधार पर भेदभाव करना व्यर्थ है। संत कवि सार्वभौम मानव-धर्म के प्रतिष्ठापक थे। रैदास का भी मानना था कि जब तक समाज में जाति-धर्म का भेद रहेगा , तब तक मानवता की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती-

जात-पात के फेर महि, उरझि रहुइ सब लोग।

मानुषता को खात है, 'रैदास' जात का रोग॥

मानवता की प्रतिष्ठा के बगैर समाज में किसी भी प्रकार के सुधार की बात करना छलावा मात्र है। मानवता के लोप के कारण ही आज का समाज सांप्रदायिकता की आग में झुलस रहा है। चारों ओर दहशत और आतंकवाद का बोल-बाला है। धार्मिक उन्माद के चूल्हे पर नेतागण अपने स्वार्थ की रोटियाँ सेंक रहे हैं। हिन्दू-मुस्लिम में अनाम दूरियाँ आ गई है। इन विपरीत परिस्थितियों में संप्रदायवाद के विरोध के माध्यम से मानवीय एकता का मार्ग संत-साहित्य से ही निकाला जा सकता है। संत कवियों ने राम-रहीम के पार्थक्य को समाप्त किया।

संत कवियों ने लोकधर्म की स्थापना की और जन-सामान्य को रूढ़ तथा जर्जर अंधविश्वासों से अलग कर मानवीयता के नए सूत्र में आबद्ध किया। साथ ही बाह्याडंबर , मिथ्याचार एवं कर्मकांड के भी विरोधी थे। वर्तमान परिवेश में उच्च विद्याविभूषित होने के बावजूद लोगों में बाह्याडंबर, मिथ्याचार आदि का बोलबाला है। लोग अंधविश्वास में अपना विवेक खो चुके हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वर्तमान पर दृष्टिक्षेप करने से यह प्रतीत होता है कि मध्यकालीन परिस्थिति से वर्तमान अधिक भिन्न नहीं है। संतकवियों का एकमात्र उद्देश्य था जनता को जागरूक कर उनका पथ प्रदर्शन करना। कबीर निराकार-निर्गुण की भक्ति का प्रतिपादन सोद्देश्य करते हैं , जिसके मूल में सामाजिक-सांस्कृतिक कारक हैं और कर्मकांड , तीर्थाटन आदि का विरोध भी इसी आशय से है। कबीर के अनुसार जो लोग मूर्ति को कर्ता मानकर पूजते हैं वे मृत्यु की काली धारा में डूब जाते हैं-

पाहन केरा पूतरा पूजै करतार।
इहि भरोसे जे रहे बूडे काली धार॥

तप-जप, रोज़ा-नमाज यह सब मन को परिष्कृत करने के साधन है। यदि मन साफ़ नहीं है तो 'वजू' करने से क्या लाभ जप-मंजन से क्या होगा? मस्जिद में जाकर सिर नवाने से क्या बनेगा। नमाज गुज़ारना या हज और काबे जाना तभी सार्थक है जब दिल में कपट नहीं है-
तीर्थाटन की व्यर्थता को प्रतिपादित करते हुए रैदास कहते हैं-

तीरथ बरत न करौ अंदेशा। तुम्हारे चरन कमल भरोसा।
जहं तहं जाओ तुम्हारी पूजा। तुमसा देव और नहीं दूजा॥

आज रिश्तों में अपनत्व का भाव नहीं है। रिश्तों में दरारें पड़ रही हैं और परिवार विघटित हो रहे हैं। इसका प्रधान कारण है पारस्परिक प्रेम का अभाव। आज 'प्रेम' की जगह 'स्वार्थ' ने ले ली है। परिणामस्वरूप मनुष्य का दायरा 'स्व' तक सिमटकर रह गया है। संत कवि प्रेम के महत्त्व को स्वीकार करते हैं।

इसी प्रेमभावना के कारण इन कवियों ने एकता स्थापित की। इन कवियों का प्रेम आध्यात्मिक होकर भी लोकपरक तथा वास्तविक संदर्भों में मानवीय है। साथ ही कबीर ने मनुष्य की धन-संचय की स्वार्थी प्रवृत्ति पर भी चोट की है। आज समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान की कसौटी मानव मूल्य न होकर केवल धन होता जा रहा है। हमारे सभी सामाजिक संबंधों और पारिवारिक रिश्तों पर अर्थतंत्र हावी हो गया है। प्रत्येक मनुष्य धन के पीछे बेलगाम घोड़े की तरह दौड़ रहा है। फलतः किसी के भी मन में 'समाधान' नदारद है। अतः कबीर ने मध्यकाल में ही मनुष्य की इस लोभी प्रवृत्ति पर चोट की है-

सांई इतना दीजिए जामै कुटुंब समाए।

मैं भी भूखा ना रहूँ साधु ना भूखा जाए॥

रैदास ने भी धनसंचय को दुख की खान कहा है-

सच्चा सुख सत्त धरम मंहि, धन संचय सुख नाहि।

धन संचय दुख खान है, 'रैदास' समुझि मन माहिं॥

मनुष्य को उसका चरित्र ही ऊँचा उठाता है। अतः चारित्रिक श्रेष्ठता को बनाए रखना अनिवार्य है। किन्तु वर्तमान परिवेश की विडंबना यह है कि मनुष्य का चारित्रिक पतन चरम पर पहुँच गया है जिसके कारण समाज विनाश के कगार पर है। संत कवि स्थान-स्थान पर बहुत स्पष्टता से चारित्रिक श्रेष्ठता की बात कहते हैं। वे मनुष्य की वाणी और कर्मों के समन्वय पर बल देते हैं , जिसका नितांत अभाव आज के नेताओं में दिखाई देता है। कबीर कहते हैं कि जो अपनी वाणी के अनुरूप कर्म नहीं करता वह श्वान है और अपने पापों के कारण नर्क भोगता है। अनैतिकता एवं अनाचार के इस युग में मनुष्य दिन-व-दिन आलस्य की ओर उन्मुख हो रहा है। कर्म से पलायन

करने के कारण ही वह संत्रस्त जीवन व्यतीत कर रहा है। ऐसे में संत कवियों द्वारा प्रतिपादित कर्म का संदेश उपयुक्त प्रतीत होता है। उनके अनुसार कर्म ही मनुष्य का धर्म है।

समग्रतः संत-साहित्य दुरूहता तथा जटिलता का साहित्य नहीं है , वरन यह मनुष्य की सहजता तथा स्वाभाविक मनः स्थितियों का साहित्य है। इसमें जनसामान्य की आशा-अकांक्षा , सुख-दुख सन्निहित है। जन-जागरण की चेतना लेकर स्फुरित हुआ यह साहित्य आशावादी मूल्यों की स्थापना करता है। सामाजिक जड़ता एवं अराजकता से घिरे वर्तमान जटिल परिवेश में हम संत-साहित्य के सामाजिक आदर्शों को आधुनिक संवेदना के अधिक निकट पाते हैं। संत-साहित्य में मानव की क्षुद्रताओं , सीमाओं, स्वार्थपरता, असत्यप्रियता, संकीर्णता, अर्थलोलुपता, कामुकता आदि पर प्रहार हुआ है। संत कवियों ने जीवनदायिनी शक्तियों की ओर जनसामान्य का ध्यान आकर्षित किया और समाज को सशक्त, निर्दोष एवं कल्याणकारी मार्ग पर अग्रसर करने की चेष्टा की है।

अतः स्पष्ट है कि संतों की शाश्वत वाणी का महत्त्व मध्ययुग में ही नहीं, भारतीय संस्कृति के लिए हर युग में रहेगा। आधुनिक युग के महान विचारकों ने भी संतो के इस महत्त्व को समझा था। संतों के राम-रहीम और केशव-करीम की भाँति महात्मा गाँधी ने भी ईश्वर-अल्लाह को एक ही समझा। उनका प्रिय भजन- ईश्वर-अल्लाह तेरो नाम , सबको सन्मति दे भगवान संतवाणी की परंपरा में ही आता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी संतों के भगवत् प्रेम के आदर्श को सार्वदेशिक और विश्वजनीत कहा है। संत-साहित्य की चिर-प्रासंगिकता का वर्णन करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं- "संत-काव्य साधना में तत्पर एवं सर्वजन की मंगलकामना करने वाले भक्तों के सरल-हृदयों की सहज अनुभूति का चित्रण-मात्र है। यह वह प्रकाश-स्तंभ है जो

निराशा, वासना, प्रतिरोध और प्रतिहिंसा के अंधकार में भटकते हुए मानव समाज को शताब्दियों से प्रकाश दे रहा है और भविष्य में भी मार्ग प्रदर्शित करता रहेगा।"

गुरु रैदास जी की सच्चाई , मानवता, भगवान् के प्रति प्रेम , सद्भावना देख , दिन पे दिन उनके अनुयाई बढ़ते जा रहे थे । दूसरी तरफ कुछ ब्राह्मण उनको मारने की योजना बना रहे थे । रविदास जी के कुछ विरोधियों ने एक सभा का आयोजन किया , उन्होंने गाँव से दूर आयोजित की और उसमें गुरु जी को आमंत्रित किया । गुरु जी उन लोगों की उस चाल को पहले ही समझ जाते है। गुरु जी वहाँ जाकर सभा का शुभारंभ करते है. गलती से गुरु जी की जगह उन लोगों का साथी भल्ला नाथ मारा जाता है। गुरु जी थोड़ी देर बाद जब अपने कक्ष में शंख बजाते है, तो सब अचंभित हो जाते है। अपने साथी को मरा देख वे बहुत दुखी होते है , और दुखी मन से गुरु जी के पास जाते है। रविदास जी के अनुयाईयों का मानना है कि रविदास जी 120 या 126 वर्ष बाद अपने आप शरीर को त्याग दिया। लोगों के अनुसार 1540 AD में वाराणसी में उन्होंने अंतिम सांस ली थी।

संदर्भ-

1 फादर कामिल बुल्के , अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश

2. रविदास दर्शन –आचार्य पृथ्वी आजाद ,गुरु रविदास संस्थान चंडीगढ़

3. रैदास-डॉ धर्मपाल मैनी ,साहित्य अकादमी दिल्ली

4. रैदास समग्र - सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी,

5. संत रविदास और कबीरदास की वाणी का अध्ययन –डॉ कमराज सिंधु

6. संत गुरु रविदास - वेणी प्रसाद शर्मा –सूर्य प्रकाश दिल्ली

7. रैदास समग्र, सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी

8. डॉ. नरेश, पंजाबी दुनिया, गुरू रविदास विशेषांक, जून - जुलाई, 1977,

9. डॉ. चन्द्रदेव राय: कबीर ओर रैदास - एक तुलनात्मक अध्ययन

10. रैदास समग्र, संपादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन, वाराणसी

11. संत गुरु रविदास की भक्ति साधना - वेणी प्रसाद शर्मा ,विश्व भारती प्रकाशन चंडीगढ़

12. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

13. रविदास दर्शन, -आचार्य पृथ्वी सिंह, गुरु रविदास संस्थान चंडीगढ़

14. संत रैदास-योगेन्द्र सिंह, लोक भारती प्रकाशन ,इलाहबाद

15. गुरू रविदास वाणी और महत्व: सम्पादक डॉ. मीरा गौतम,

16. संत गुरु रविदास वाणी –डॉ॰ वी ॰पी॰ शर्मा ,सूर्य प्रकाशन दिल्ली

संप्रति –अध्यक्ष हिन्दी विभाग ,दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय

कुरुक्षेत्र विश्वविधालय,कुरुक्षेत्र।